बी॰ ए॰ भाग-2
प्रधान- हिन्दी

रमेश कुमार यादव
हिन्दी -विभाग
डी. के. कॉलेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)

रश्मिरथी

'रश्मिरथी' किस प्रकार का काव्य है? काव्य के भेदों को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट कीजिए।

भारतीय आचार्यों की मान्यता और परम्परा की दृष्टि से काव्य के दो प्रमुख भेद माने जाते हैं। उनके नाम है- 1. प्रबन्ध काव्य और 2. मुक्तक काव्य। प्रबंध काव्य में कोई न कोई कहानी रहती है। उसका प्रत्येक पद्य एक-दूसरे के साथ जुड़ा रहता है। उन्हें अलग करके नहीं समझा जा सकता। इसके विपरीत मुक्तक काव्य में कोई कहानी वगैरह नहीं रहती। उसका प्रत्येक पद्य स्वतंत्र होता है। उसमें कोई एक भाव या एक विचार पूर्ण रहता है। सभी स्तरों पर एकत्व की रक्षा आवश्यक है। इस आलोक में, प्रथम दृष्टि से 'रश्मिबंध' प्रबंध काव्य ही कहा जायेगा।

प्रबंध काव्य के भी दो भेद होते हैं। एक महाकाव्य और दूसरा खण्ड-काव्य। महाकाव्य में किसी व्यक्ति के सारे जीवन का वर्णन रहता है जबकि खण्डकाव्य में जीवन की किसी एक ही मुख्य घटना का वर्णन किया जाता है। इस दृष्टि से यह निर्णय कर पाना बड़ा ही कठिन है कि 'रश्मिरथी' महाकाव्य है कि खण्ड-काव्य। क्योंकि कवि ने संकेत और संक्षेप में इस काव्य में कर्ण के जीवन की सभी घटनाओं का वर्णन कर दिया है। फिर भी इसमें महाकाव्यों जैसा विस्तार और औदात्य नहीं है। देश, काल और वातावरण का चित्रण भी वैसा नहीं है। उद्देश्य अवश्य ही महाकाव्यों जैसा ही है और वह है- मानव के गुणों को जगाना। मानव की जाति या वंश के

आधार पर नहीं बल्कि गुणों के आधार पर इज्जत करना। इस प्रकार उदात्त उद्देश्य और संदेश के रहते हुए भी इसे हम महाकाव्य नहीं कह सकते। दूसरी तरफ इसे एकाएक खण्ड-काव्य भी नहीं कहा जा सकता खण्ड काव्य घटना उद्देश्य की दृष्टि से एकत्व प्रधान होता है। 'रश्मिरथी' के संदर्भ में हमें यह खोजना पड़ेगा कि इसमें कर्ण के जीवन की मुख्य घटना कौन सी है। क्योंकि जितनी भी घटनाएँ इसमें दी गई हैं, उनमें से किसी का भी महत्व कम नहीं है। सभी कर्ण के महान चरित्र को उजागर करने वाली हैं, अत: समान महत्व एवं गौरव रखती है।

स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि क्या कर्ण द्वारा अर्जुन को द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारने की घटना को प्रधान माना जाये? या फिर उसके द्वारा कवच-कुण्डल के दान की घटना को महानतम घटना कहा जाये? परशुराम द्वारा कर्ण को सब कुछ सिखाने के बाद भी श्राप देने की घटना को मुख्य माना जाय, या माता कुन्ती को दिये जाने वाले वचन को? हमारे विचार में इसमें से कोई भी घटना कम महत्व नहीं रखती। यहां तक कि कर्ण की मृत्यु की घटना भी किसी प्रकार कम नहीं। ऐसी स्थिति में इसे एकदम खण्ड-काव्य कह देना उचित नहीं है। इसके काव्य-रूप का निर्णय करने से पहले थोड़ा खण्ड-काव्य और महाकाव्य के लक्षणों पर विचार कर लेना भी उचित होगा। वे लक्षण इस प्रकार हैं—

महाकाव्य और खण्ड-काव्य दोनों में कथा-वस्तु रहती है। अन्तर केवल विस्तार का होता है। महाकाव्य में सारे जीवन की और खण्ड-काव्य के

जीवन की एक ही मुख्य घटना का वर्णन होता है। यह यह कथा कम से कम सात सर्गों में विभाजित होती है ये दोनों बातें 'रश्मिरथी' में मौजूद है। पात्र, उनका चरित्र-चित्रण, संवाद, देशकाल और वातावरण का चित्रण भी सामान्यतया इस काव्य में किया गया है। महाकाव्यों जैसा विस्तार इस काव्य में निश्चय ही नहीं है। प्रकृति-चित्रण भी सामान्य रूप से किया गया है। रात प्रात: काल और सुबह आदि का वर्णन भी है। प्रत्येक सर्ग में छन्द का परिवर्तन भी मिलता है। कवि ने आरम्भ में स्तुति भी कही है, पर वह स्तुति परम्परागत रूप में भगवान की न होकर मानवता के महान गुणों की है।

भगवान श्री कृष्ण के विराट रूप वर्णन में काफी विराटता भी है। काव्य निश्चय ही महान उद्देश्य से पूर्ण है। इस प्रकार हम इस काव्य में प्रबंध काव्यों के प्राय: सभी लक्षण पाये हैं। परन्तु इतना सब होते हुए भी हमारे विचार में इसे एकदम और शुद्ध रूप से महाकाव्य और खण्ड-काव्य नहीं कह सकते। क्योंकि कवि ने इसमें निजी स्तर पर वैचारिक दृष्टि से बहुत-कुछ भर्ती किया है। उसने कर्ण के माध्यम से जातिवाद, अवैध संतान और युद्ध जैसी समस्याओं पर अपने ढंग से अपने विचार प्रकट किए हैं।

अत: यहाँ विचार की ही प्रधानता है, परम्परागत कथावस्तु का उतना महत्व नहीं। ऐसी स्थिति में केवल सर्गो में विभाजित देखकर ही इसे महाकाव्य या खण्ड-काव्य कहना उचित नहीं होगा।

कवि ने प्रत्येक सर्ग के आरम्भ में प्रत्येक सर्ग के बीच में भी अनेक बार अपने विचार भरने का

प्रयत्न किया है। जाति-पाति, युद्ध तथा अन्य भेद-भावों का विरोध करने के लिए कवि ने पूर्ण रूप में आधुनिक दृष्टिकोण अपनाया है। श्रम और पुरुषार्थ को उसमें स्थान-स्थान पर महत्व दिया है। ये सभी बातें परम्परागत कहानी से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रखती। कवि की अपनी काव्यगत चेतना की परिचायक हैं। एक अंश

श्रम से नहीं विमुख होंगे जो, दुःख से नहीं डरेंगे।
सुख के लिए पाप से जो नर सन्धि न कभी करेंगे।
कर्ण-धर्म होगा धरती पर बलि से नहीं मुकरना।
जीना जिस अप्रतिम तेज से उसी शान से मरना॥

फिर कवि ने यदि कर्ण की कहानी सर्गों में बाँटकर कही भी है तो केवल कहानी कहना ही उसका उद्देश्य नहीं है। वास्तव में वह उसके माध्यम से मानव के महान गुणों पर ही विचार करना चाहता है। दया, दान, वीरता, दीन-दुखियों की सहायता, स्वाभिमान, श्रम-पुरुषार्थ आदि गुणों पर विचार करना ही हमें कवि का मुख्य उद्देश्य दिखाई देता है। क्योंकि काव्य को पढ़ने पर स्थान-स्थान पर यही बातें अकेली या एक साथ उभर कर हमारे सामने आती हैं। मानवता की भलाई के लिए त्याग और बलिदान के रास्ते पर चलने वाले लोगों के वैदिक और पौराणिक उदाहरण तो आये ही हैं, ईसा, गाँधी जैसे बाद के और आधुनिक उदाहरण भी आये हैं। सभी का अर्थ एक ही है। एक उदाहरण देखें —

जो नर आत्मदान से अपना जीवन-घट भरता है।
वही मृत्यु के मुख में भी पड़कर न कभी मरता है ।।
जहाँ कहीं है ज्योति जगत में जहाँ कहीं उजियाला।
जहाँ खड़ा है कोई अन्तिम मोल चुकाने वाला ।।

उपरोक्त विचार- विश्लेषण के आधार पर हम 'रश्मिरथी' काव्य को विचार- प्रधान या विचारात्मक काव्य कहना ही अधिक उचित मानते हैं। एक वाक्य में इसे 'महाकाव्यात्मक विचार-प्रधान काव्य' कहा जा सकता है। खण्ड-काव्य इसलिए कहना उचित नहीं कि सांकेतिक रुप से ही सही, पर कर्ण के सारे जीवन की प्रायः सभी घटनाएँ उसमें आ गई हैं। दिनकर जी मानवतावादी कवि हैं। उन्होंने अपने प्रायः सभी काव्यों में मानव- मूल्यों पर ही मुख्य रुप से विचार किया है। यहाँ भी विचार की ही प्रधानता है। मानवता अपने औदात्य के कारण ही समान्य एवं जीवित है, अतः इसी तथ्य के आलोक में व्यक्ति विशेष और समाज का मूल्यांकन होना चाहिए, यही विचार प्रधान रुप से उजागर हुआ है। अतः उसे 'प्रबंधात्मक विचार-काव्य' भी कहा जा सकता है और यही कहना उचित भी है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी॰ के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)